आरती

रविवार २८.९.७५

आज "आरती" पर कुछ बोलना है। मन्दिरों में आरती होती है, घरों में आरती होती है, प्रकाश के साथ आरती होती है। इस आरती का कुछ अर्थ भी तो होगा या केवल घी और बाती का एक रूप ही आरती है? देखता है प्रकाश की ओर, और दूसरी ओर प्रकाश का एक साधारण सा रूप आरती के रूप में रखता है। यह आरती कोई भावना ह्रदय में उत्पन्न करती है या केवल एक क्रियात्मक कार्य ही है?

आर्त्त हो करके अर्थात् दुखित होकर के लोग पुकारते हैं क्योंकि उनको अनेक प्रकार के दु:ख होते हैं। जैसे धन की कमी, जन की कमी या अन्य किसी प्रकार की कमी। मनुष्य दुखित हो कर के भगवान के प्रति जो प्रार्थना करता है – वह 'आर्त्त भक्त' है। आर्त्त क्यों है? साधारण रूप से यह देखा जाता है कि किसी प्रकार का कष्ट होगा या आपद, विपद आने वाली होगी, उससे बचने के लिये मनुष्य आर्त्त हो कर के, दुखित हो करके प्रभु को पुकारता है। जब आरती उतारता है तब शायद वह आर्त्त भाव उतना रहता नहीं क्योंकि आरती उतारना, यह प्रकाश को प्रकाश दिखलाने की तरह है। आरती जो मनुष्य उतारता है वह यह नहीं जानता कि "आरती" शब्द क्या कहता है? आरती शब्द कहता है – "आओ तुम प्रेम में रत हो जाओ, मिल जाओ। यह प्रकाश स्वरूप जो प्रभु की मूर्त्ति है, इस मूर्त्ति में तुम भी मूर्त्त हो जाओ। तुम्हें भी अपने शरीर का भान न रहे"।

रति का भाव प्रेम से है और एक होता है कामदेव और रति। कामदेव वासना का प्रतीक है और रति उसकी अर्द्धांगिनी है तो यह उसकी सहायिका

होती है किन्तु यह तो इसका स्थूल अर्थ है यह कोई विशेष अर्थ नहीं रखता। बात यह है – कुछ काम है और उस काम की पूर्ति नहीं होगी, जब तक कि व्यक्ति उस कार्य में रत नहीं हो जाता।

हम प्रार्थना करते हैं – हमारी यह कामना है, हमारा यह काम है, हम प्राणी हैं, हम जीव हैं, हमें शिव रूप में मिला ले। लेकिन इस कामना की पूर्ति तभी होगी, जब कि हम रति का रूप धारण करेंगे अर्थात् हम पूर्ण रूप से उस काम की पूर्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना करेंगे तब हो जायेगी आरती। कामना है, भावना है, जिसे हम देखें, उसी के रूप में हो जाये, उसी में लीन हो जायें, तब वह आरती, आरती है।

भक्तों ने अनेक प्रकार से आरती की। जैसे एक पंक्ति है "तेरी ज्योति से हो रही आरती" यह आरती तेरी ज्योति स्वरूप है, प्राणों को आनन्द देने वाली है। यदि तेरी कृपा न होती तो यह आरती होती कैसे ? तू ने प्यार करने का ढंग सिखलाया, ढंग सिखलाते-सिखलाते ढंग गायब हो गया और तेरे ही में समा गया। प्रारम्भ में मनुष्य जब कोई काम करता है तो वह कार्य एक प्रणाली का अनुभव कराता हुआ चला जाता है। भिन्न-भिन्न धर्मों में इस प्रणाली की प्रधानता है लेकिन यह प्रणाली बतलाती है कि केवल प्रणाली की ओर न देख, प्रण की ओर देख, वह प्रण यह है "आया हूँ जीव के रूप में और जाऊँगा शिव के रूप में। मेरा यह जीवन कोई तमाशे की चीज नहीं, दुःख-सुख भोगने की भावना नहीं। मैं जीव बन कर आया हूँ, आज मैं तेरी आरती उतारता हूँ, आर्त्त हो कर के पुकारता हूँ, मेरे भीतर यही दुःख है कि मैं अब तक शिव न बन पाया, तुम्हारे रूप के अनुरूप न बन पाया, तुम्हें पा कर भी पा न सका। अब तक मैंने तुम्हें रिझाने के लिये आरती नहीं गाई, मेरे

भीतर की भावना हमेशा मुझे अभाव की ओर खींचती है, उस अभाव की पूर्ति के लिये मैं चाहता हूँ कि मैं तुझ में रत हो जाऊँ यही मेरी आरती है"।

जब प्रभु के सम्मुख खड़ा हो कर प्राणी आरती उतारता है तो साधारण व्यक्ति यह समझते हैं कि प्रभु को प्रकाश में लाने के लिये है। भक्त इस दीपक को संजो कर के लोगों के सम्मुख रखता है कि यदि तुम ऐसे न देख पाओ तो भक्ति का प्रकाश लो, प्रेम का प्रकाश लो। जब तक तुम प्रकाश नहीं लोगे, तब तक भगवान का यह दिव्य रूप तुम्हें कैसे दिखलाई देगा। साधारण स्थिति में हम देखते हैं कि एक चीज जो अन्धेरे में पड़ी हुई है, उसे देखने के लिये हमें प्रकाश की आवश्यकता है, तो प्रभु को देखने के लिये हमारे हृदय में प्रेम का प्रकाश होना चाहिये। फिर अन्धकार दुनिया में रह सकता है लेकिन हमारे हृदय में अन्धकार रह नहीं सकता। क्यों? क्योंकि हम प्रकाश स्वरूप प्रभु की आरती में लीन है।

जब तक मनुष्य शब्दों में लीन है, अपने गाने की तरंग में लीन है तब तक भगवान चुपचाप बैठा हुआ है और गाने वाला गा रहा है और स्वयं ही सुन रहा है। भगवान कब सुनेगा? भगवान तब सुनेगा जब तुम्हें होश नहीं रहेगा कि – तुम हो या भगवान है या भगवान ही तुम हो। जब तक ऐसी भावना तुम्हारे भीतर नहीं आयेगी कि "जो कुछ हम कह रहे हैं यह भगवान के लिये कह रहे हैं, अपने लिये नहीं कह रह हैं या तुम्हीं भगवान हो।" अपना भान जब नहीं रहता, तब आरती गाने वाला आर्त्त नहीं रहता, आ रत हो जाता है, लीन हो जाता है। क्योंकि वह कहता है "आरती क्यों गाता है, आ, मेरे समीप आ, भूल जा दुनिया को, मेरी दुनिया में आ। तुझे शान्ति मिलेगी, प्रेम मिलेगा, भक्ति मिलेगी, भाव मिलेगा। तू जो कुछ चाहता है वह मिलेगा, लेकिन तू आ

मेरे समीप, मेरी ओर आ, रत हो कर के आ, भीतर की भावना से आ। ये दुःख की बातें न कर; दुःख कब था जब मैं तेरे सम्मुख न था। अब आज तू मेरे सम्मुख, मैं तेरे सम्मुख अब दुःख किस बात का"।

हम जिससे मिलना चाहते हैं आज उसने अवसर दिया है मिलने के लिये, आरती उतारने के लिये, प्यार करने के लिये, प्यार के भाव में बहने के लिये। जिसने मुझे ऐसा अवसर दिया है उसे देखकर भी यदि मैं रत न हो सका तो मैंने कैसी आरती उतारी। गद्‌गद् हो जाता है प्राणी और कहता है "तेरे ही प्रकाश से ये वाणी के टूटे फूटे शब्द कहता हूँ, तेरी ही ज्योति से हो रही आरती। मुझ में इतनी शक्ति नहीं कि तुझे पहिचान सकूँ। मैंने प्रकाश किया, तुम्हारे लिये नहीं प्रभो, इस अन्धकार पूर्ण हृदय में प्रेम की ज्योति जगमगा उठे इसीलिये मैंने ये दीपक रखा है।" दो को एक करने के लिये यह दीपक, यह प्रकाश, यह अग्नि, प्रतीक है। क्योंकि जागतिक व्यवहार में भी हम देखते हैं कि दो प्राणियों को एक करने के लिये अग्नि की साक्षी दी जाती है चाहे वह स्त्री के रूप में हो, चाहे वह पुरुष के रूप में हो। आज प्रभो! अग्नि साक्षी है – मुझे एक दिन इस अग्नि में ही शान्त हो जाना पड़ेगा, लेकिन शान्त होने के पहले तेरी कृपा से कह सकूँगा कि इस जगत में यदि जाग्रति है, भाव है तो तेरी कृपा से है अन्यथा यह जगत का व्यवहार, केवल व्यवहार है, जिसमें केवल हार है।

यह ज्योति क्या है? जो थी, वही है। जो प्रकाश स्वरूप प्रभु था, वही है यहाँ। आज हम इसको प्रतीक के रूप में मानते हैं। लेकिन जब "मैं " गिर जाता है, रत हो जाता है तब "मैं " रत नहीं, मूर्त्ति के रूप में बन जाता है। प्राणी है, प्राण ले कर आया है। आज वह अपने प्राणों के भाव से आरती

उतार कर कहता कि "मैं रत हूँ, मैं शरणागत हूँ, मेरा तुमसे भिन्नता का कोई प्रश्न ही नहीं। तेरी ही ज्योति से यह आरती उतर रही है। तेरे ही भाव से आज मैं प्रभावित हो कर, तेरे चरणों के समीप खड़ा हो कर, तुझे यह प्रकाश स्वरूप में देख कर, प्रकाश को और भी प्रकाशमय बनाने के लिये आज यह आरती उतार रहा हूँ।" केवल इतना ही नहीं कि "तेरी ही ज्योति से हो रही आरती" विशेषता है तेरी "सोये हुए को तू ने जगाया।" ये दुनिया के कर्मकाण्डों में मैं जो सोया हुआ था, तुमने कहा – "जाग, उठ, देख मुझे, मैं कैसा हूँ। मैं प्रकाश स्वरूप, मैं आनन्द स्वरूप तू मुझे देखेगा, देखते-देखते एक दिन तू मुझमें ही अपने आप को देखेगा।" मुझ में ही अपने आप को देखेगा, प्रभु की पूर्ण कृपा भक्त पर होगी तभी तो ऐसा होता है। आरती तो प्रत्येक दिन प्रभात और सन्ध्या के समय मन्दिरों में होती है और जहाँ-जहाँ मूर्ति स्थापित है घर में, बाहर में कहीं भी वहाँ यह आरती होती है लेकिन कहाँ आरती, कहाँ प्रकाश का भाव आया? यदि प्रकाश का भाव नहीं आया तो आरती कैसी? रत होगा, आरत नहीं होगा। उस प्रभु के सम्मुख जा कर भी हम दु:खी तो हमारा दु:ख कौन निवारण करेगा?

प्रकाश के सम्मुख भी यदि मैं देख न पाऊँ तो कहना होगा कि मैं जन्मान्ध हूँ। प्रकाश स्वरूप प्रभु के रूप को देख कर भी मैं अपने दु:ख को भूल न सका, इससे बढ़ कर और कोई दु:ख की बात मेरे लिये नहीं हो सकती। यह आरती हो रही है तुम्हें रिझाने के लिये नहीं, अपने दु:ख को भुला कर प्रेम में मगन होने के लिये। तुलसीदास ने कहा है – "मो समान आरत नहीं, आरत हर तोंसो" मेरे समान कोई दु:खी नहीं और तेरे समान दुखियों के दु:ख को हरण करने वाला और कोई नहीं। वाणी का विलास प्राणी करता है क्योंकि मनुष्य के पास यही तो सबसे बड़ा धन है – चाहे इस वाणी

से प्रभु को रिझाये, अपने आपको रिझाये, दुनिया को रिझाये या दुनिया से खीझ जाये, अप्रसन्न हो जाये।

वाणी का प्रयोग हमेशा ही महापुरुषों ने किया। वह प्राणी जो दुनियादारी में सिर धुन रहा था, उसके भीतर की उस धुन को हटा कर प्रभु की धुन लगा देता, प्यार के बाजे बजाता और अपने प्रभु को रिझाता और रिझाते-रिझाते सब कुछ भूल जाता। इन्सान का प्यार नहीं जो धोखा दे सकता है। यह प्रभु का प्यार है जिसमें धोखा नहीं, जो कल्मष धो देता है और 'खा' कैसा? उसी का हो जाना, उसी के प्यार को खा जाना, उसी में समा जाना। धोखा तो दुनिया ने दिया। जिस दिन भगवान भी धोखा देने लगेगा, उस दिन इस दुनिया की क्या हालत होगी।

दुनिया मरती है, भगवान अमर है। अन्तर है दोनों में। एक पैदा होता है और मर जाता है, और न वह पैदा होता है और न वह मरता है। उसे मृत्यु छू नहीं सकती क्योंकि मृत्यु का बनाने वाला, अमृत का सृजनकर्त्ता, भाव में बहाने वाला मेरा श्याम, मेरा प्रभु। सुबह शाम, श्याम-श्याम कह कर प्राणी अपने दु:ख को भूल जाता है। उतारता है आरती, करता है प्रकाश – "ऐ प्रभु, एक दिन यह प्रकाश करते-करते मेरे हृदय का प्रकाश भी आपके चरणों में समा जाये। मैं दिखाने के लिये कुछ नहीं करता, मैं किसी को यह दिखलाना नहीं चाहता कि 'मैं आरती कर रहा हूँ।' अपने प्यारे का प्रेम, प्रेम की आरती क्या दिखलाने की चीज है? यदि दिखलाने की है तो वह प्रदर्शन है, वह एक दिखावा है जिस दिखावे में प्राणी को कुछ नहीं मिलता"।

इस आरती की महिमा कैसे लोग जानें, क्योंकि जब तक रत न हो तब तक आरती कैसी? रत हुआ, लीन हुआ। रत को उलटा देने से तर बन

जाता है अर्थात् रत हुआ, तर हुआ और तर हुआ तो दुनिया की सम्पूर्ण जितनी निरर्थक भावनायें थीं, उनका कहीं पता नहीं। यह पानी है आँखों का जो धो देता है हृदय की कालिमा को और यह पानी है ऊपर का जिसकी शरीर तक ही गति है। आँखों के पानी की गति इतनी तीव्र, इतनी महान, इतनी विशेषता रखनेवाली कि प्रभु के हृदय में भी अश्रुपात। "आया, भूला हुआ प्राणी आज मेरे दरवाजे पर आया","कहता है – आर्त्त हूँ , कहता है – आ रत हो जा, तेरा आर्तपना, तेरा दुखित भाव अब मुझसे देखा नहीं जाता।" खटखटाया है दरवाजा, प्रवेश पाया है प्राणी ने, प्रभु के समीप पहुँचा है प्राणी, अब तो केवल प्रभु के भाव का आलिंगन मात्र ही रह गया। एक प्रेमी दूसरे प्रेमी से आलिंगन बद्ध हो जाता है तो उसे किसी प्रकार के चिन्ह का पता नहीं रहता।

शिव की प्रतिमा है जिसे शिवलिंग कहते है। लिंग शब्द का अर्थ होता हैं, परिचय। आलिंगन में क्या होता है? शरीर का भान नहीं रहता। शरीर से शरीर मिला – शरीर तक रह गया। प्राणों से प्राणी मिला – प्राणों में समा गया, प्राण प्राणी के हो गये। ये प्राण जिसने दिये हैं ये प्राण उसके हो गये। एक प्राणी दूसरे प्राणी से शरीर से मिलता है, बहुत कम अंशों में मन से मिलता है और उससे भी कठिन प्राणों से। प्राणों से मिलने का एक ही रास्ता है, यह रास्ता है सद्गुरु का। जब उसकी ज्योति जगमगाती है, तब प्राणी खड़ा हो कर के कहता है "तू ने प्राण दिये हैं, तू ने भाव दिया है, तू ने प्यार दिया है अपने में समा जाने के लिये। इसलिये यह जो आरती हो रही है, यह तेरी ज्योति से हो रही है। तेरे दिये हुए प्यार को मैं कैसे लौटाऊँ, अपने दुःख को तो मैं उसी दिन भूल गया, जिस दिन तेरे दरवाजे पर आ कर बैठा"। अन्धे सूरदास ने सवा लाख पद गाये प्रभु के भूल गया कि मैं सूरदास हूँ। यह

प्रेम है जिसका कोई रूप नहीं है। कैसे प्राणी प्रेम करता है, क्यों प्राणी प्रेम करता है – यह आज तक प्राणी समझ नहीं पाया।

रीझा किस पर? जो नाशवान है। यदि रीझना अविनाशी पर होता, अमर भाव पर होता, तो उसकी आरती सदा के लिये उसे आर्त्त भाव से दूर कर देती और वह समा जाता उस महातत्व में जहाँ से कि उसका उद्‌गम हुआ है, जहाँ से उसका जीवन प्रारम्भ हुआ है। अनेक कर्म किये, अनेक खेल देखे आज आखिरी है और वह आखिरी यह है – "तेरी ज्योति से हो रही आरती।" "यह प्रकाश तेरा है, यह आनन्द तेरा है, यह जो कुछ है सब तेरा ही तेरा है – यह कहते-कहते, यह तेरा मेरा जो है वह छूट जाता है। अब वह कहता है – यह मेरा यह जगत मेरा, क्योंकि यह मेरे का है। यह संसार मेरा इसलिये है कि यह मेरे का बना हुआ है। मैं फिर किसे भूल जाऊँ, मैं कैसे इन पर क्रोधित हो जाऊँ – ये तो मेरे प्राण हैं क्योंकि ये तो मेरे प्रिय के बनाये हुए (प्राणी) हैं।" न क्रोध है, न ईर्ष्या है, न द्वेष है, न कोई कामना है, न वासना है क्योंकि इन से ऊपर उठा, तब तो उसके नजदीक जा सका। जब तक मनुष्य के भीतर यह भावना रहती है कि "मैं समझदार हूँ, मैं ज्ञानी हूँ, मैं भगवान की आरती उतारता हूँ " तब तक केवल दीपक जलता है, घी निरर्थक नष्ट हो रहा है, बाती झूठमूठ में जल कर के राख हो रही है। क्योंकि जब तक भाव नहीं, तब तक भगवान का प्यार नहीं।

भगवान के प्यार को पाने के लिये आज हमने मंगला आरती उतारी। मंगला आरती – जो प्रभात के समय, न सूर्य उदय हुआ है, न रात्रि का अन्त हुआ है, कुछ समीप भाव है उस समय मंगला आरती उतरती है। मंगलमय भगवान है। हे प्रभो! जो कुछ तू कर रहा है संसार के मंगल के लिये। संसार के प्राणी जानते नहीं कि इस अमंगल में भी कौन सा मंगल छिपा हुआ है। एक

ओर सृष्टि समाप्त होती है और दूसरी ओर सृष्टि सम्मुख आती है। जो भूमि पहले पानी में छिपी हुई थी वह ऊपर आती है और पानी दूसरी ओर बहने लगता है, उधर की जो भूमि है वह पानी से ढक जाती है। यह क्या तमाशा है? यही तो तमाशा है – जो कल तक अन्धेरे में था आज वह आरती उतारते-उतारते प्रभु का हो गया, आज वह प्रकाश में आ गया। जो माया के कारण बहुत ऊँचा समझा जाता था, प्रभु ने कहा – "ना, माया वाले की जीत नहीं, यहाँ प्रेम वाले की जीत है। यह प्रभु के प्यारों का स्थान है, यहाँ केवल वे ही आ सकते हैं जो मेरे हैं। जो दुनिया के हैं – वे खेले दुनिया में, मैं उन्हें नहीं कहता कि तुम मत खेलो, लेकिन खेल कर क्या तुम शान्ति पा सकोगे?"

प्रकाश से मनुष्य जितना अधिक दूर होता है उतना ही वह अन्धकार के समीप पहुँचता है। प्रकाश की ओर ज्यों-ज्यों मनुष्य बढ़ता है वैसे ही वह प्रकाश स्वरूप प्रभु का हो जाता है। यह "आरती" हमेशा ही प्राणी के भीतर में प्रकाश को बतलाने वाली है किन्तु आधी पंक्ति ही नहीं आगे कहा भक्त ने – "सोये हुए को तू ने जगाया।" सो रहा था मैं, गहरी नींद में सो रहा था मैं, कहा – उठ, जाग, खड़ा हो, प्रभात हुआ, देख प्रकाश स्वरूप प्रभु तेरे सम्मुख। अब भी सोया रहेगा, अब तो जाग। उस समय जब कि भक्त के भीतर की भावना जागती है तो वह यह कहता है – "तेरी ही ज्योति से हो रही आरती " आरती मैं नहीं कर रहा हूँ, तेरा प्यार, तेरी भावना ही मुझे विवश कर देती है कि तेरे सम्मुख खड़ा हो कर के कहूँ कि तेरी ज्योति है, तेरा ज्ञान है, तेरा प्रभाव है, तेरा ही प्रेम है। बस।

❋❋❋